भगवत् कृपा

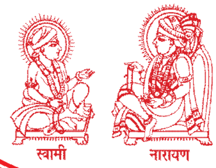

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 25 अंक : 5 | 15.9. 2002, रविवार (सितंबर-अक्टूबर) | वार्षिक चंदा : 50.00

अन्नकूटोत्सव...

5 नवम्बर, मंगलवार की सुबह 11:45 को 'ताड़देव' मंदिर में

श्री अक्षरपुरूषोत्तम महाराज

एवं

सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को

वार्षिक महाभोग लगा कर आरती होगी...

इस मंगलकारी अवसर पर

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित रहने का

आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान :

श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर,

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,

अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

'दीपावली और नूतन वर्ष के शुभाशीष'

५.११.८३

दीपावली के दिन दीपक प्रगटाने से प्रकाश फैलता है,
वैसे ज्ञान का भी विकास हो और अंतःचक्षु खुलें व दिव्यदृष्टि मिले,
जिससे कि सत्संग में दत्तात्रय की तरह सर्वत्र अच्छाई ही नज़र में आए
और
केवल गुण ही दिखाई दें।
फलस्वरूप दिव्यभाव बढ़े और अति बड़े पुरूष अत्यंत राजी हो जाएं।
यही है परम साधन और जीवन में भी साधना की वही पूर्णाहुति व सिद्धि है ?
वासना और स्वभाव के हिसाब चुका कर गुणातीत की द्विशताब्दी के निमित्त
नए वर्ष पर नए सिरे से 'श्री गणेशाय'— आरंभ करें
और
वचनामृत - गढडा मध्य 8 के मुताबिक ज्ञानयज्ञ का अंत आने पर अंतर में प्रतीति हो कि –
प्रभु और संतों तो मेरे साथ अखंड ही हैं और वे सर्वोपरि ही वर्तते हैं तथा मेरे हित के लिए ही वर्तते हैं।
तो, निश्चिंतता व निर्भयता से
अब भिन्न-भिन्न अंग वाले व समकक्षा वाले दो भगवदियों के साथ मैत्रीभाव दृढ़ कर लेने ज्ञानयज्ञ का अंत लाकर
परम सुखी बनें और दूसरों को भी (सुखी) करें।
ऐसा बल-बुद्धि और सुरूचि व प्रेरणा अति बड़े पुरूष दें यही अंतर की तीव्र अभिप्सा।
चेतना के अमाप विकास के साथ-साथ
आपका व्यवहार और सत्संग फला-फूला और रसभरा एवं सक्रिय रूप से वृद्धि को पाता रहे
ऐसा सर्जनात्मक जीवन प्रभु और संत बख़्शें यही सद्‌गुरुचरण में प्रार्थना ?
नए वर्ष की ऊषा पर सभी को दिव्यभाव से तरबोर करते रह कर
प्रेम की, मैत्रीभाव की और एकता की अमृतभरी दृष्टि ही बरसाते ही रहो— यही प्रार्थना।

आपके ही—
दादुकाका के हेतपूर्वक नूतन वर्ष के शुभाशीष।

हर साल की तरह दशहरा, शरद्पूर्णिमा, दीपावली, नूतन वर्ष के पर्वों की श्रृंखला रूप मंगलमय दिनों की आहट सुनाई पड़ने लगी है।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने बात **प्र-2** की **158** में कहा है कि –

पाँच बातें सानूकूल हों तब प्रभु भजे जा सकते हैं। वह पाँच हैं— संग, शास्त्र, श्रद्धा, अच्छा देश व अच्छा काल !

खूब गहराई से सोचें तो पूर्व के अनंत पुण्यों के फलस्वरूप आज ये पाँचों चीजें हमें बख़्शिश में सहज सुलभ हैं...

संग – गुणातीत पुरूषों की गोद व एकांतिक भक्तों का अच्छा संग।

शास्त्र – वचनामृत, स्वामी की बातें, शिक्षापत्री जैसे सत्शास्त्र।

श्रद्धा – गुणातीत पुरुष हमारे जीवन में सामने से आए और इससे भी अधिक अनेक प्रकार के अनुभव करा -करा के उन्होंने ही हमारे भीतर श्रद्धा प्रगटाई।

अच्छा देश – भारत जैसा देश... अवतार पुरूषों ने भी पृथ्वी पर अवतरित होने भारत की ही भूमि पसंद करी !

अच्छा काल – कलयुग होते हुए भी प्रभु ने खूब कृपा करके गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया से हमें **'सत्युग'** में रख दिया। सो आज हमारे जैसा भाग्यशाली और कौन ? बस, ऐसे सर्वोपरि प्रभु की प्राप्ति, ऐसे श्रेष्ठ वरदान, ऐसी प्रेम संजीवनी पाने के अखंड आनंद में डूबे रह कर गुणातीत पुरुषों के साथ अपना संबंध दिन-प्रतिदिन दृढ़ करने की ओर नित नई उमंग, उल्लास से अग्रसर होना—वही है प्रगट के उपासकों का दशहरा, शरद्पूर्णिमा, दीपावली-नूतन वर्ष ! यहां यह पंक्ति सहज याद आ जाती है कि—

'जो काका के भरोसे जीते हैं, हर बात निराली है उनकी।
हर रोज दशहरा है उनका, हर रोज दीवाली है उनकी !'

गुणातीत स्वरूपों ने अपने आश्रितों के लिए दशहरा, शरद्पूर्णिमा के दिनों को स्मृतिमय बना कर

मानो चार चांद लगा दिए। जगत में आसुरीवृत्ति पर सत्य की विजय के प्रतीक के रूप में दशहरा मनाया जाता है। गुरुहरि योगीजी महाराज ने इसी दिन **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को पार्षदी दीक्षा देकर मानो हमें दिव्य संकेत दिया कि ऐसी गुणातीत विभूति के बल, हूँफ, प्रेरणा, दर्शन, सेवा, समागम व पथप्रदर्शन से हम आसानी से अपने भीतर की आसुरीवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे।

तत्पश्चात् शरदपूर्णिमा यानि–मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के धरती पर अवतरित होने का महामंगलकारी दिन ! मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतनंदस्वामिजी के अवतरण से पहले केवल भगवे कपड़े ही 'साधु'का प्रमाण माने जाते थे, किन्तु **स्वामिजी ने धरती पर आकर 'साधुता' के असली रूप की पहचान करा दी।**

ना देखी ना सुनी किसी ने ऐसी रीत निराली !

सच, श्रीजी महाराज यदि स्वामिश्री को धरती पर साथ में ना लाए होते, तो सच्ची साधुता का दर्शन कौन कराता ? सच्ची साधुता के लक्षण कहीं अंधेरे में ही रहते। रिद्धि-सिद्धि, अंधश्रद्धा, वहम्, झठे रीति-रिवाज, अधिक आडंबरों, लोक-लाज, अंधविश्वासों के आवरणों के बंधनों में हम लिपटे रहते। शुद्ध ब्राह्मी स्थिति का ख्याल ही कौन देता ? स्वामिजी ने 'साधुता' शब्द को सिर्फ बातों में ही ना रख कर स्वयं ऐसे जीवन जीकर युगों-युगों के लिए चरितार्थ किया है। गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी स्वामिश्री के इस प्रागट्य दिन पर **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को भागवती दीक्षा देकर हम सभी धन्य कर दिया !

हम सब पर तो भगवान स्वामिनारायण की कैसी अनहद् करुणा कि हमारी पात्रता-कुपात्रता को देखे बिना, हमारे दोष-गुण गिने बिना केवल मौज में अपना संबंध दिया। इससे भी अधिक हमारे योग व क्षेम की–जन्मों से जड़ता भरे स्वभावों के बंधनों से छुड़ाने की जिम्मेदारी भी उन्होंने ले ली ! **वचनामृत गढडा मध्य 45** में श्रीजी महाराज ने कहा कि–

' सारा मुनिमंडल तथा ब्रह्मचारी, गृहस्थ सत्संगी तथा पार्षद एवं अयोध्यावासी– तुम सभी मेरे कहे जाते हो। पर यदि लगन रख कर मैं तुम सब को नहीं वर्ताऊं और तुम सब लापरवाही से वर्तने लगो, वो हमसे देखा नहीं जाएगा। सो, जो-जो मेरे कहे जाते हो उनमें तो मुझे एक तिलमात्र भी कसर रहने नहीं देनी है... और तुम जो-जो भगवान के भक्त हों, उनके हृदय में मुझे किसी भी प्रकार की वासना व किसी भी प्रकार की अयोग्य स्वभाव नहीं रहने देना है...'

प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती का जब मंगलकारी वर्ष चल रहा है और प्रभु व गुणातीत पुरुष लुटाने ही बैठे हैं, तो हम सब मिल कर दृढ़ संकल्प करें कि हमारे मन को उनकी स्मृतियों से निरंतर भरा-भरा रख कर पूरा वर्ष हम अखंड ब्रह्मानंद की मस्ती में ही रहें। हम पर किए गए अनथक् परिश्रम को याद करके उनके प्रति भक्ति अदा करके भजन करते-करते ही क्रिया करने की आदत बना दें। निरंतर अंतर्दृष्टि करके 'ज्ञानयज्ञ' करते रहें और मायिकभाव, मलिन स्वभाव व मन-बुद्धि के तांडवों का स्वाहा करने **'अखंड ब्रह्मयज्ञ'** चालू रखें और साधुता के दीप प्रगटा कर सही अर्थ में दशहरा, शरद्पूर्णिमा, दीवाली, नूतन वर्ष मनाते रहें !

✡✡✡

स्वर्णशिविर के पंडाल से– ' भोजनम् ज्ञानामृतम् '

[30 मार्च'02, सुबह]

प.भ. प्रभाकरभाई

'काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती मनानी है'– ये निर्णय लेते ही गुरुजी के मन में एक ऐसा उमंग और इतना जोश आया कि मानो कई बार तो हम ये भी सोचते कि इस नाजुक तबियत में भी इतना परिश्रम कर सकते हैं ? कोम्प्यूटर्स पर बैठना, कार्ड के लिए बैठना, हर जगह उन्होंने इतना उत्साह दिखाया... गुरुभक्ति का एक लक्षण होता है, उसके साक्षात् दर्शन गुरुजी में होते हैं...

आज का आया व्यक्ति हो या बीस साल पुराना, काकाजी में उसके प्रति की ममता या उसके प्रति की एक कॅरफुलनेस होती थी। काकाजी को किसी ने कोई काम कहा हो कि काकाजी ये मेरा काम ऐसा है, तो एक हफ्ते के बाद अगर काकाजी उसे मिलें, तो फट् पूछते कि तेरे काम का क्या हुआ ? ये मेरे अपने अनुभव की बात है...**उनके साथ किसी की तुलना नहीं करी जा सकती। किसी के साथ उनका कम्पेरिज़न हो ऐसा पोसिबल ही नहीं है...**

और जो बात काकाजी की थी, वो यूनीक ! ये सारे समाज में चाहे वो गुणातीत ज्योत हो, चाहे वो योगी डिवाईन सोसाईटी हो, चाहे वो अनुपम मिशन हो– सबके बारे काकाजी ऐसी महिमा गाते... सुबह उठ कर वो शेव कर रहे होते या हाथ में चाय का कप होता तो भी कथा होती रहती। जब भी वो उठते तो कथा ही करते होते। एक दिन वो टाई लगा रहे थे, वो टाई उनको सेट करनी थी कि वो बराबर सेट हो जाए– उनका वो निशान बराबर आ जाए, वो करते-करते भी काकाजी बातें करते रहे। चप्पल पहनते होते तो बातें करते। मतलब कि– ऐसा कोई पिरियड उनके जीवन में नहीं देखा जाता कि जिस समय वो कथावार्ता नहीं कर रहे हों...

हमारे अंदर के जो भाव होते हैं, वो सत्पुरुष को पहुँचते जरुर हैं। हाँ, उसकी मेग्नेनीमिटी जो होती है, उसमें हमारे अनुसार फर्क पड़ता है, उनको तो कोई फर्क नहीं पड़ता...

गुरुभक्ति अदा करने की जो रीत होती है, वो गुरुजी में हमें देखने को मिलती है। जैसे काकाजी के प्रति गुरुजी का भक्ति अदा करने का भाव है, वैसा ही भाव, वैसा ही हम कर पाएं–ऐसी आज के दिन सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी (जगरांव)

... सत्संग में आने के बाद हमारे बहुत से कर्तव्य हैं। सत्संग में सभी भक्तों के साथ मिल जुल कर रहना, किसी का अवगुण नहीं लेना, सिर्फ गुण ही लेना। कोई कटाक्ष में भी कुछ कह दे, तो बुरा नहीं मानना अपने हित में ही समझना...

दूसरी बात– नापातोली करने की हमारे में बहुत बड़ी कसर रहती है। जैसे कि– प.पू. गुरुजी-संत लोग उसको पूछते हैं, मुझे पूछते नहीं हैं। उसको साथ में खाना खिलाते हैं, बड़ा आदमी है ना ? मगर काकाजी महाराज ने कुरुक्षेत्र में एक बार कहा था कि– 'गर्वनर साहेब पानीपत आ रहा है, उसका मैसेज आ रहा है कि काकाजी हमारे साथ खाना खाएंगे; मैं पानीपत जा रहा हूँ , शाम तक वापिस आ जाऊंगा। ये बड़े लोग हैं, इनको सोफे पर बिठाना पड़ता है, खाना भी साथ में खाना पड़ता है। मगर हमारे भक्त लोग पहले, ये लोग बाद में। इनको स्टेटस के हिसाब से आदर-मान देना पड़ता है।'

प.पू. काकाजी महाराज ने गुरुजी के बारे में कहा कि ये मुकुंदस्वामी जितना नीचे को है, अंनत गुणा ऊपर को है। बड़े-बड़े संत भी इसको पहचान नहीं पाएंगे। इसकी सेवा कर लेना, इसको राजी कर लेना, मैं अपने आप राजी हो जाऊंगा...

प.भ. एन.के. अग्रवालजी

...मैं अपने को उन भाग्यशाली सेवकों में से मानता हूँ जिन्होंने सिर्फ उनके दर्शन किए हैं। लेकिन काकाजी ने जो हमें गुरुजी के रूप में एक भेंट दी हुई है, वो इतनी अमूल्य भेंट है कि वो हर समय काकाजी को अपना लक्ष्य मान कर जीवन जीते हैं और जिन लोगों ने स्थूल रूप से दर्शन नहीं भी किए हैं, उनको अध्यात्म रूप से काकाजी की खूब अच्छी पहचान कराते हैं।

गुरुजी का जीवन हम अगर देखें, तो सिर्फ एक लक्ष्य कि काकाजी इस काम में राजी होंगे ? उनको इस बात की कोई चिंता नहीं कि कोई क्या कहेगा ? लोक में लोग उनको क्या कहेंगे ? ये वो कभी सोचते नहीं हैं। बस उनका एक ही लक्ष्य है कि मेरी इस क्रिया से काकाजी राजी होंगे ? काकाजी को मुझे राजी करना है।

तो आज ये जो हम स्वर्णजयंती पर्व मना रहे हैं, इसमें उनका लक्ष्य ये नहीं है कि यहां पर एक बड़ा जलसा किया जाए। लेकिन ये उनका गुरुभक्ति अदा करने का एक तरीका है और हम इस तरीके से अपने आप को अलग नहीं रख सकते हैं। अभी जैसा कि कई हरिभक्तों ने कहा कि गुरुजी को या काकाजी को या दिनकरभाई को हम पहचान नहीं पाते, ये बात सच है। लेकिन जो भी आज हमारे सामने हैं, उन्होंने अपना सारा जीवन लगा करके काकाजी से जो सीखा है और जो प्राप्ति करी है, वे हमारी बीमारी के लिए जो इलाज-दवाई बताएं, उस पर हम चल पड़ें, उसको हम लेते रहें उसी से हमारा उद्धार होगा– ऐसा मेरा मानना है और ऐसा हम करेंगे, तो जरुर उद्धार होगा। यूं तो जीवन में जीने के लिए बहुत-सी विशेषताएं हैं, बहुत-सी कलाएं हैं; लेकिन **हम अपने आप को 'स्वामिनारायण' का कहते हैं, तो कम से कम एक चीज़ हमें हमेशा जीवन में याद रखनी है कि हम जहां भी रहें, जिस हाल में भी रहें ऐसा काम करें कि हमारी एक अलग पहचान हो जाए कि हम स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़े हुए हैं।** वो

पहचान क्या कि बस हर समय अपने आराध्य का - काकाजी का - महाराज का ध्यान करके, गुरुजी का ध्यान करके कोई भी काम करेंगे, तो हम जरुर आगे बढ़ जाएंगे और जैसे कि मुझे याद है कि ए-103 में एक मूर्ति लगी हुई थी; उसमें एक बड़े आदमी के साथ एक छोटा-सा बच्चा जा रहा है– ऐसा था। मैंने एक बार उत्सुकता से गुरुजी से पूछा था कि गुरुजी इसका अपने संप्रदाय से क्या लेना-देना ? तो गुरुजी ने उसका मिनींग समझाया था कि यही तो अपने संप्रदाय के ज्ञान का सार है कि जैसे जब माँ-बाप के साथ कोई बच्चा जाता है, तो उस बच्चे की सारी जिम्मेदारी उनकी होती है।

उसी तरह जब हम कोई भी काम करते हैं, तो अगर **काकाजी को– गुरुजी को ध्यान में रख कर करेंगे, तो पहले तो वो गलत होने ही नहीं देंगे और अगर होगा भी तो उसकी जिम्मेदारी उनकी बन जाती है। यह मान कर अगर हम जीवन जीएंगे, तो कभी भी हम पीछे नहीं रह पाएंगे और हमारा जो भी काम होगा, उसमें हम जरुर सफल होंगे।** फिर तीन प्रकार के जो कष्ट हैं– शारीरिक या मानसिक या आध्यात्मिक... महाराज ने खुद वचनामृत में कहा हुआ है कि उन्होंने अपने गुरु रामानंदस्वामी से ये वचन मांगे कि अगर मेरे भक्त को एक बिच्छु के काटे का कष्ट हो, तो मुझे सौ बिच्छु के काटे का कष्ट हो– ऐसा उन्होंने वचन मांगा। तो जब हम ऐसे गुरु पंरपरा की सेरेछाया में हैं, तो कष्ट कभी होगा भी तो उसका प्रभाव हमारे ऊपर इतना नहीं होगा जितना कि अन्यथा हमारे ऊपर रहता... आज दिनकरभाई बैठे हुए हैं, उनसे इतनी प्रार्थना कि हमें इतना बल देना कि किसी भी काम को शुरु करने से पहले हम महाराज का, काकाजी का, गुरुजी का और स्वरूपों का ध्यान करके काम करने की शुरुआत करें–ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना !

प.पू. गुरुजी

...मैंने एक बार बात करी थी जो साहेब ने खुद बात करी थी कि काकाजी के लेटर्स जब आते थे तो हमें कुछ समझ नहीं आती थी। हम तो फाईल करके रख देते थे। साहेब ने खुल्ले मन से यह बात करी। दरअसल हम भीतर में झाँकेंगे तो हम लोगों ने भी ऐसा ही करा है। काकाजी की करी हुई बातें हमें वाकई समझ नहीं आ रही थीं। मैं मेरे बारे तो यही समझता हूँ कि एक्चुयली तो काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद ही यूं कहा जाए कि मुझे सत्संग का होश आया; यह हकीकत है। बाकी तो कभी कुछ समझे ही नहीं। सत्संग की ए,बी,सी नहीं पता थी यूं कहा जाए तो चले। हाँ, काकाजी ने हमेशा मुझे संभाला है। पहले भी संभालते रहे, शरीर छोड़ने के बाद भी।

बहुत अच्छा इन्सीडन्स बताता हूँ। अपने आप में ख्याल तो पड़ता है ना कि कैसे जीना चाहिए था काकाजी के साथ। लेकिन बाद में ऐसे विचार भी आते कि सब कुछ लुटा कर अब होश में आए तो क्या ? अब तो स्थूल रुप से काकाजी हैं नहीं। यूं दोनों तरफ से माईन्ड में दुविधा रहे। आप लोगों को भी शायद ऐसा होता होगा कि हवे डहापण करके शुं ? हवे जाणपणुं राखीने शुं ? मुझे भी होता था कि जब थे तब समझे नहीं और समझा तब भी माना नहीं और अब सब कुछ लुट गया तब होश में आए ! एक बार यूं खूब मन में इसकी कश्मकश चलती रही। आखिर माईन्ड थक भी जाता है। फिर काकाजी ने एकदम सपने में कहा कि तू ऐसा क्यों मानता है कि मैं नहीं हूँ ? मैं तुम्हारे साथ ही हूँ। मेरा तो आप जानते हो कि वो थे तब भी दलील तो चालू रहती। तो मैंने एकदम फट् से सपने में ही कहा कि– अगर साथ में ही हो, तो दुःख क्यों रहता है कि आप नहीं हो। तो काकाजी बोले– ए तो थाय। मैंने कहा ऐसे कैसे हो सकता है कि अगर हो, तो फिर दुःख क्यों है ? एकदम फट् से वे बोले कि महाराज जब धाम में गए तो गुणातीतानंदस्वामी बेहोश नहीं हो गए थे ? तो क्या महाराज उनके साथ नहीं थे ? मैं कहता हूँ तुम्हें कि मैं यहां हूँ तुम्हारे सभी के साथ। मुझे ये नहीं कहा कि – 'तेरे साथ'। कहा– मैं यहां तुम सभी के साथ हूँ ही। तो तब मुझे 'धरपत' हुई कि वे वैसे के वैसे ही हैं, बस दिखते नहीं हैं।

तो अभी ये जो टेपें सुनते हैं, तब ऐसा होता है कि उस समय भी ध्यान से सुनी होती तो ? सो सबसे पहले तो दिनकरभाई से यह प्रार्थना करनी है कि मैं तो बीच में बोलूंगा ही, आपको भी ऐसा लगे कि काकाजी की कोई बात मिस हो जाती है–समझने लायक है , तो वहां भी ऐसा एक माईक है, बीच में इन्टरवेन करके भी जरुर समझाएं...

मैं एक बात कहना भूल गया था कि अभी हम दो दिन यहां हैं, खास करके जो आऊट स्टेशन्स से आए हैं; पंजाब से, हरियाणा से, जयपुर से, गुजरात से, मुंबई से आप लोग यहां दो दिन हो, तो 'पर डे' ज्यादा करो वो तो अच्छा है, लेकिन इक्यावन परिक्रमा जरुर करना - काकाजी की समाधि पर। लेकिन

उसमें एक बात रखना कि परिक्रमा करते-करते बातें नहीं करना, वर्ना हमारा हरीश कहता है ना कि कई बार श्मशान यात्रा में जाते हैं तो अर्थी पर कंधा देते बोलते भी रहते हैं 'राम नाम सत्य है' और बाजु वाले को पूछते भी हैं कि – 'चाँदी का भाव क्या चल रहा है' ?

मौन यानि– 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते हुए। 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते हुए का मतलब– काकाजी को जिन्होंने देखा हुआ है वो काकाजी की स्मृति करते हुए... काकाजी को अगर आपने देखे ही नहीं हैं, तो जहां तुम्हारा अटेचमेन्ट हो, उस **संत की स्मृति करते हुए स्वामिनारायण-स्वामिनारायण-स्वामिनारायण करते हुए** इक्यावन परिक्रमा करना और वो परिक्रमा तुम्हारे लिए नहीं करनी है। यह बात खूब समझना, मज़ाक नहीं कर रहा। देखो जैसे काकाजी की बातें मज़ाक में ले ली, वैसे आप लोग नहीं करना। वो इक्यावन परिक्रमा करने के बाद वहां एक या आधा मिनिट खड़ा रह करके संकल्प करना कि काकाजी ! ये परिक्रमा का फल तुम्हारे मुकुंद को अर्पण करना है। तुम लोग यहां आए हो तो मैं कुछ भेंट तो मागूँगा ना ? तो ये भेंट देकर जाना। पर ये भेंट का फल मुझे तभी मिलेगा जब आप बातें नहीं करोगे और परिक्रमा करोगे तो। बातें नहीं करने का मतलब मौन रख करके; मौन रख करके का मतलब– 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' अजपाजप या जोर-जोर से– जैसे तुम्हारी हेबिट हो। और वो भी स्मृति सहित जप, नामी सहित नाम। उसका फल एकदम इन्सटन्ट होगा, मुझे काम में आ जाएगा...

काकाजी ने ये एक-दो रहस्य बताए। काकाजी ने सत्संग की शुरुआत में ही कहा है कि **योगी महाराज तो दिव्य हैं ही, लेकिन उनके संबंध वाले भी ऐसे ही दिव्य हैं।** लेकिन इनकी हाज़िरी में हम आखिर तक यह नहीं मान पाए, हकीकत में नहीं मान पाए। वे इस पर ही जोर देते रहे। देखो कल मुझे घनश्याम ने एक बात करी। काकाजी ने रतलाम जाकर के ललिताकाकी को आखिर में कहा था कि तुम ज्योति में दिव्यभाव रखो। मतलब वो उनकी हमेशा की बात थी। और हमें देखो, **हमें दूसरे सब संत लोग भाएंगे, लेकिन साथ में रहे मुक्तों, उसके साथ हमारा मेल नहीं बैठ पाता होगा।** काकाजी यह ठोक-ठोक कर कहते रहे। इतना है कि अभी वो बात समझ में तो आई, उस समय तो समझे ही नहीं। मैं जो कहता हूँ कि काकाजी की ये बात हमने नहीं सुनी थी–वह यह कि **'संबंध वाले मुक्तों को दिव्य मानो'।** यहां एक सूत्र लिखा है समाधि पर और कितनी गांरटी दी है कि यह एक बात अगर रखोगे कि साथ में रहते मुक्तों के स्वभाव, उनकी क्रिया में दिव्यभाव रखें...। मैं तो यहां जो रहते हैं– दिल्ली में, उनको भी यही कहता हूँ कि यह बात हम क्यों नहीं मानते ? **हमें अगर काकाजी से अपना काम करा लेना हैं।** जाड़ी भाषा में कहूँ तो हमें अगर काकाजी से अपना काम निकलवा लेना है, निकलवा लेने का मतलब हैं कि जो चीज नड़ती है, **स्वभाव छूटते नहीं हैं**, उसका हल कैसे हो जाए ? आप गृहस्थ हो **व्यवहार का कोई कष्ट हो**, कैसे टल जाए ? तो **उसका यह एक शॉर्ट कट है कि संबंध वाले मुक्तों को दिव्य मानेंगे, तो महाराज को हाजराहजूर रह कर काम करना ही पड़े।** ये गारंटी की बात समाधि पर लिखी है;आप पढ़ना। कई कहते हैं कि भगवान के पास हमें माँग-माँग नहीं करना है, मैं कहता हूँ कि– माँगो। पता तो लगेगा कि महाराज हमारी बात सुनते हैं।

काकाजी कितनी ऑथेन्टीक बात वो बोल कर गए हैं कि ये करेंगे तो भगवान को हाजराहजुर रह करके काम करना ही पड़े। तो हम इस रास्ते क्यों ना चलें ? अक्लमंदी तो वो है ना कि काकाजी से हमारा कोई काम निकलवा लेना है, तो सिफत से निकाल लें। **ये सिफत बताई हुई है।** लेकिन यहां हमारा देहभाव बीच में आ जाता है। हम कई बार क्या करते हैं कि जिन मुक्तों के साथ हमारी नहीं पटती होगी और जानते हैं कि अपना सत्संग का एक नियम है कि झंझट में नहीं जाना, अभाव में नहीं जाना; तो हम उससे कतराते रहेंगे। वो यहां से आता होगा, तो हम वहां से चले जाएंगे कि भई इनके सामने जाएं ही नहीं कि कहीं भिड़ ना जाए। फिर सोचेंगे कि अब ठीक रहा। हाँ, ऐसा भी जरुरी नहीं है कि जहां नहीं बनती है वहां तुम सामने से भिड़ने जाओ कि मैं ट्राई करुं कि अब मैं डिस्टर्ब हो जाता हूँ कि नहीं। वो हमें नहीं करना है। जो टेस्टिंग करना होगा वो महाराज करते रहेंगे। वो सामने से भेजते रहेंगे, लेकिन वो सामने आए तब हम हटे नहीं और दिव्यभाव पकड़े रखें। मिरेकल हो जाएगा, अपने स्वभाव कैसे निकल जाएंगे, अपनी व्यवहारिक गांठे भी कैसे सुलझ जाएंगी–जो काम हमें काकाजी कहते कि मचेड़-मचेड़- मचेड़ के हमें करना पड़ता है, वो अपने आप सोल्व हो जाएगा। हकीकत में सोल्व हो जाएगा। ये मेरी कही बात नहीं है– समाधि पर काकाजी का लिखा हुआ है कि ये गारंटी की बात है। कहते हैं ना कि गाय का बछड़ा खूंटे की ताकत पर कूदता है, यूं मुझे पता है कि इन्होंने लिखा है तो होगा ही। मुझे ये बात का पक्का है कि **इन्होंने जो कुछ कहा है, वो 150 प्रतिशत ऑथेन्टिक है। हम चलते नहीं वो ही कसर है।** जितना चलते हैं, इतनी मंजिल कटती है। तो, अब चलते ही रहें, चलते ही रहें। और चलना कैसा है ?

तो हमारे यहां एक भजन बनाया है– 'अब तो चलना होगा...' काकाजी हमेशा कहते रहे कि जोड़ में रहना - जोड़ में रहना। हम कोई नहीं रहे, जोड़ में रहे सिर्फ प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी और इसलिए काकाजी के मुख के वो पान बन चुके। ऊपर प्रदर्शनी में भी लिखा है कि इनकी तारीफ करते काकाजी कभी थकते नहीं थे। इसकी वजह यह है। ये अगर नहीं करेंगे– जोड़ में नहीं रहेंगे तो हम कैसे रहेंगे, वो 'अधजली लकड़ी के जैसे...' भजन में एक बार नहीं बार-बार गाया है। **जोड़ में नहीं रह पाते क्योंकि हम अपने मन के संग हैं।** वो हमें जोड़ में नहीं रहने देता। और ऐसे जोड़ में ना रह करके मन के साथ जो रहेगा, उसका एक-एक पोईन्ट भजन में बताया है। देखो हम डूबे रहते हैं ना ? 'कुछ होता ही नहीं है, कुछ मिलने वाला ही नहीं है, कहते तो हैं पर कुछ होगा ऐसा लगता तो नहीं वगैरह'– काकाजी मुँह लटका कर बताते भी थे... यूं सड़ते भी रहते हैं हम ! यह मैं सबकी बात करता हूँ। मैं भी जब मन के साथ बैठ जाता हूँ ना, मेरी हालत भी ऐसी हो जाती है। स्वामिजी इसको अलग ढंग से बात करते हैं कि आत्मा को सुखी होना है– **जीव का नॅचर है सुख में रहने का, मन का नॅचर है जीव को दुःखी करने का और साधु का नॅचर है जीव को सुखी करने का। अब अक्लमंदी तो जीव को रखनी होगी कि मुझे मन के साथ रहना है या साधु के साथ रहना है।** साधु के साथ रहने का मतलब ये भी नहीं है कि कॉन्स्टन्ट फिझिकली उसके साथ रहा करो। मन से उसका चिंतन करा करो– स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण... स्मृति समेत, वो भी साधु के संग है...

हां, मंगलाचरण में गणेश का मतलब काकाजी ने बताया है। विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता...गणेश। अपने विघ्न टलवा देने हैं और मंगल हो ऐसा चाहते हैं, गणेश को आगे रखो। और... **काकाजी ने बता दिया कि 'गणेश' यानि 'भगवदी'।** इसका मतलब ये कि महाराज से... हमारा काम निकलवा लेना हो, तो उसके लिए वो गणेश की खुशामद करो। पर नहीं करेंगे हम। वहां ऐसा होगा कि वो है तो हम नहीं हैं क्या ? आपस-आपस में हम संतों को भी ऐसा हो जाता है। ये सारा होता है, नहीं होता है ऐसा नहीं है। मेरा तो अब कहना इतना ही है कि जो गल्तियां हमने करीं और जिसके कारण जो डीले हुआ है, बस वो मन के साथ अब तो हम जुड़े ना रहें, डूबे ना रहें, सड़ते ना रहें, अधजली लकड़ी की तरह सुलगते ना रहें। लेकिन कईयों को शौक ही होता है; जैसे पप्पाजी पूछते हैं सुखे-दुःखे जाना है ? पर, ऐसा ना हो ना कि हम बस रोते ही रहें-रोते ही रहें, सड़ते ही रहें-सड़ते ही रहें। रास्ते में कई बच्चों को देखना– फुटपाथ पर बस बैठ ही जाते हैं। रोते रहेंगे, घसीटते रहेंगे उसके पापा, थप्पड़ मार कर फिर उठा कर ले जाएंगे। हम ऐसे गए हुए हैं। अब वो चितार याद आता है तो कंपकंपाहट होता है। ये ना हो इसलिए ये बात करी।

देखो यहां एक बात समझनी है। काकाजी ने कहा कि इक्वल ओपोर्च्युनीटी– **ओपोर्च्युनीटी इक्वल है।** मैं कई बार कह चुका हूँ कि **भगवान को समदर्शी कहा है**– 'समदर्शी है नाम तिहारो' भजन भी है वो विवेकानंदजी के टाईम का। पर बापा ने कहा कि इसमें भले समदर्शी कहा हो, **भगवान समदर्शी नहीं हैं।** फिर स्वामिजी ने एक बार बात करी थी कि **भगवान सिर्फ उनके भक्तों के हैं। भगवान को इतना पक्षपात है कि भगवान भक्तों के हैं।** भगवान को भी मेरा-तेरा है, **वर्ना गीता में क्यों कहते कि 'मेरे' भक्त का नाश नहीं होगा ?** भगवान ने कहा कि– 'मेरे भक्त का' यानि पराया है न कोई ? दिनकरभाई कहें कि 'मेरा लड़का'– मतलब कोई पराया है ना ? इसी तरह भगवान कहते हैं कि 'मेरे' भक्त का नाश नहीं होगा। मतलब **दूसरों की रेस्पोंसीबीलिटी मेरी नहीं है; वो काल, कर्म और माया के अधीन हैं। हम उनके होकर रहेंगे तो स्वामी की बातों में लिखा है कि बचने का रास्ता नहीं होगा तब भी भगवान कैसे भी रक्षा करेंगे ही।** ये सारी चीजें हमारे जीवन में घटी हैं और घटती रहेंगी। हमने कितनी बार ये अनुभव किया कि जब बचने का कोई रास्ता नहीं हो, तब चमत्कारी रूप से इन्होंने हर जगह हमारी रक्षा करी है। हर मोड़ पर वो खड़े हुए दिखाई पड़े हैं। ये मंदिर की जमीन की बात कई बार मैं कह चुका हूँ... प्रभु से दिल से माफी मांग लो। पर किसी से तुम हर्ट हुए हो, फिर अगर तुम उसे कहने जाओ कि 'सोरी'– मतलब तुम उसे कहने जाते हो कि तूने मुझे हर्ट किया है, पर आई हेव फॉरगिवन यू । कई चीजें तो हमें पता ही नहीं होती हैं कि हम क्या करते हैं ये। एक तो– हमारा ईगो है इसलिए हम हर्ट हुए, ऊपर से उसे सोरी कहने जाते हैं , हमारी ये चालाकियाँ कैसी होती हैं ? कई बार मैं मंदिर में बैठा होता हूँ ना ? मेरा तो ऐसा है कि मैं मेरे विचारों में खोया हुआ हूँ और मैं तुम्हें देखता भी हूँ, तो भी मुझे पता ही नहीं चलता कि ये राकेशभाई आए हैं– सामने बैठे हों तब भी नहीं। और ये अब की बात नहीं, बचपन से ऐसा है; माईन्ड ही कुछ ऐसा है। लेकिन मैंने कई बार देखा है कि थोड़ी देर के बाद वो सेवक पूछेगा– गुरुजी की तबियत अच्छी नहीं है क्या ? वह क्यों ? कि– हम आए और स्माईल नहीं दिया। कहने का इतना ही है कि उसको पूछो कि हम आए उसकी एक्नॉलेजमेन्ट क्यों नहीं दी ? पर पूछेंगे इस तरह कि गुरुजी की तबियत अच्छी नहीं है क्या ? अरे ! तबियत तो तुम्हारी बिगड़ी–नहीं बुलाया इसलिए और ऊपर से गुरुजी को क्यों कहते हो ? हम कितनी सॉफस्टीकेटेड चालाकियाँ करते हैं ? लेकिन अच्छा है काकाजी ने मुझे इतना दिमाग दिया

है कि तुम लोग जो चालाकियाँ करते हो वो मुझे पकड़ में तो आ जाती हैं। ऐसी हम ना करें। काकाजी की ये कथावार्ता को ठीक से सुनें......

...ये बातें काकाजी ने दिल्ली में करी— जबकि पप्पाजी, स्वामिजी यहां बैठे भी नहीं होते थे ना ही पप्पाजी और स्वामिजी के साथ जुड़ा समाज यहां बैठा होता था। लेकिन **काकाजी हमेशा बोलते** थे— 'धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को-धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को'। **इन्होंने कभी नहीं कहा कि यह सब अकेले हाथ काम बना है, ना हम सेवकों को कभी कहने के लिए हिम्मत पड़ी कि हम कहें कि यहां सिर्फ काकाजी के कारण ही सब काम हुआ है।** वे सिर्फ मुंबई या गुजरात में ऐसा बोलते थे ऐसा नहीं है। गुणातीतानंदस्वामी की बात है कि मेरी अकेले की महिमा गाओगे तो मेरी अपकीर्ति कराओगे। **काकाजी की हर बात, उनकी**

पल-पल की जीवनशैली— चाहे हम सब बैठे हों, चाहे वो छोटे लड़के बैठे हों, चाहे उसका पर्सनल ग्रुप बैठा हुआ हो, वो उसी ढंग से बात करेंगे। खूब अंतर्दृष्टि करने जैसी बात है। हम करेंगे ऐसा— लेकिन देखेंगे कि दूसरे सब बैठे हैं तब। बाकी कॉर्नरिंग करते रहेंगे।

अगर हम सच में काकाजी के हैं—कहने के लिए नहीं; **तो काकाजी की ये जीवनशैली को अब तो निहारें। अगर हम भी यही करते रहेंगे, फिर कौन मानेगा कि हम काकाजी के हैं ?** ये मैं कई बार कह चुका हूँ कि **हम हमारे ग्रुप में एकता से रहें, उसको मैं 'एकता' नहीं मानता। एक ग्रुप के हम एक होकर रहें, दूसरा कोई ग्रुप का आए, हम बोलें नहीं— भीतर से भौंकने लग जाएं; भीतर से भौंकना मतलब— भीतर से इरीटेट हो जाएं। काकाजी ने तो यहां तक कह दिया कि क्षोभ हो जाए, तो हम काकाजी के नहीं हैं।** इसको तो मैं इतना ही समझता हूँ कि **एक गली के कुत्ते दूसरी गली के कुत्ते को भौंक कर निकाल देते हैं। क्या आप ये कहोगे कि उस गली के कुत्तों की एकता है ? वह तो पशुता है।** तो अभी भी हम अगर यही करते हैं, तो **हमें** अभी **कुत्ते में से तो इंसान होना है।** फिर **बाद में स्वामी कहते हैं वैसे देव बनना है, फिर 'भुलकुं' की बात।** इसलिए काकाजी पूछते थे— तुम कहां हो ? ये जवाब हमें अपने आप को इस शिविर में से ढूंढना है। नहीं पता लगता हो तो दिनकरभाई से पूछना— लेकिन अकेले में पूछना कि हम कहां हैं ? वे बता देंगे... अब दिनकरभाई आराम से बात करो, अब मेरा टाईम पूरा हो गया। अब मुझे मुँह पर टेप लगा देनी पड़ेगी।

प.पू. दिनकरभाई बोले—

ऐसा नहीं है गुरुजी। आपकी परावाणी है और मैं भी इधर आया हूँ, लेने के लिए आया हूँ और हम सब इधर आए हैं, वो जो गुरुजी ने ऐसा भव्य समाज तैयार किया है... काकाजी ने गुरुजी को इधर भेजा1969 में। वैसे वो शास्त्रीजी महाराज का संकल्प था कि स्वामिनारायण भगवान उत्तर भारत से आए हैं और गुजरात के जो हरिभक्त हैं उनको तो स्वामिनारायण भगवान का बड़ा महिमा है; वो इधर दिल्ली में भी हो— नंदाजी को भी वो बताया था। काकाजी कई बार कहते हैं कि योगीजी महाराज ने भी ये बोला था। मगर जो काम किया है, वो गुरुजी ने किया है। जब भी मैं गुरुजी को याद करता हूँ, उनकी काकाजी के प्रति की जो भक्ति है, वो अनेरी है और मेरे दिल में बहुत बैठ जाती है। तो इसलिए टाईम थोड़ा था, फिर भी मैंने सोचा कि ये लाभ लेना है। और इसलिए कैसे भी करके मैं ये प्रसंग में आ पाया। आज गुरुजी जो बोल रहे हैं और जो काकाजी बोलते थे, उसमें कोई फर्क नहीं है। पेटर्न अलग होगी, बोलने की स्टाइल अलग होगी। मगर अंदर का जो रहस्य है, सत्य है वो तो वही है। काकाजी हमको यही करवाना चाहते हैं। जैसे काकाजी ने बोला कि भगवदी को गणेश मानो। भगवदी को आप विघ्नहर्ता मानो, भगवदी को आप सुखकारी मानो— तो आपका काम होगा। वो गणेश की स्टोरी काकाजी बता रहे हैं। गणेश ने अपनी माँ से कहा कि मेरे मन में भी इच्छा रहती है कि मैं इससे शादी करुं। देखो, अब माँ का वचन— ये टेक्नीक बताई माँ ने। माँ ने बोला कि जो गौ है, वो पृथ्वी का स्वरूप है। आप गौ की प्रदक्षिणा करो, पृथ्वी की प्रदक्षिणा हो गई ! गणेश ने मान लिया सचमुच और जाकर ब्रह्माजी से बोला कि मैं प्रदक्षिणा करके आ गया हूँ , मेरी शादी हो जाए। और... वो कार्तिकस्वामी तो वन-फोर्थ भी नहीं पहुँचे होंगे और इधर शादी हो गई। और जब कार्तिकस्वामी थके-थके, भुखे-तरसे उधर आए और ब्रह्मा को बोले कि मेरा नंबर लगाओ, मेरे आगे तो इधर कोई आया नहीं है। ब्रह्मा ने बोला कि ये तो काम हो गया, कई दिन हो गए। तो वो दुःखी हो गए। अपने भाई के साथ ही शादी हुई फिर भी दुःखी हो गए ! अपने भाई को भगवदी नहीं माना। **कोई दैवी शक्ति उसको आगे ले जा रही थी— वो नहीं माना।** इसलिए वो गणेश का भी उसको मन में तिरस्कार आ गया। अपनी माँ का भी तिरस्कार

आ गया और बोला कि अब मैं घर से निकल रहा हूँ। जंगल में जाकर ऐसा तप किया कि अपने खून में जो माता का भाग है, वो खून को भी जला दिया, वो सुखा दिया। इसलिए काकाजी ये स्टोरी बताते थे कि शायद वो कार्तिकस्वामी ने गणेश के साथ भगवदी का नाता रखा होता, तो ये नतीजा नहीं आता। ये समझ हम सबको पक्की करनी है। अश्विनभाई हैं विद्यानगर में, वो एक अच्छी बात बताते थे कि हम जो भी काकाजी के, पप्पाजी के, स्वामिजी के, गुणातीत स्वरूपों के संसर्ग में, संग में आए हैं उन हम सबका ब्रह्मरुप होना पक्का हो गया है। हम सब ब्रह्मरुप हो जाने वाले हैं। मगर हमें एक और नज़र से भी देखना है कि जो कोई नया सत्संगी भी आया है, वो भी एक दिन जब ब्रह्मरुप होने वाला है; तो उसको नमस्कार करें, पाँव पड़ें ही। जब वो ब्रह्मरुप होने वाला है तब पाँव पड़ेंगे ही, तो आज क्यों नहीं पड़ें ? ऐसी भावना से हम देखना शुरु करें अब।

धुलेन्डी का बड़ा उत्सव मनाया। सब के शरीर पर– फेस पर चंदन का लेप लगा था। तो मैं बोल रहा था कि सब सरीखे हैं अब। किसी के अंदर कोई फर्क नहीं दिखता है, सब ब्रह्मरुप दिखते हैं। तो हमारे घनश्यामभाई ने बोला– बस वो माना जाए ऐसा करो। सब दिखते तो हैं, पर माने नहीं जाते कभी-कभी और वो ही करना है। **हम अंदर से भावना करेंगे तो ये स्वरुप हमको आशीर्वाद देने के लिए तैयार ही हैं। हमको ऊपर उठाने के लिए तैयार ही हैं,** हमको नहीं डुबाएंगे वो। मगर हमें वो अच्छा लगता है। वो काकाजी बोलते थे कि कुरेद कर दुःख खड़ा करते हैं हम। जानबूझ कर हम दुःखी होना चाहते हैं, इसलिए यह प्रॉब्लम है। और हम ऐसे समाज में आए हैं, सो वो चला जाने वाला है, चला जाने वाला ही है। मगर उसमें देरी नहीं करे, जल्दी हो जाए– यही ये गुरुजी का संकल्प है, भाव है। इसलिए ऐसा आज मौका मिला है हमें। हम सच्चे दिल से गुरुजी को ये प्रार्थना करें, जो कि आप रात को उठ-उठ कर भी हमारे लिए प्रार्थना करते हो। तबियत नहीं ठीक होने पर भी पूरा आराम भी नहीं करते हो और हर एक भक्त की हाँ में हाँ करके उसको सत्संग में आगे ले जाते हो।

आज सुबह में हम अनिलभाई के वहां बैठे थे। तो बता रहे थे कि गुरुजी ने बोला था कि ऐसा गेट बनाना है। अनिलभाई प्रेक्टीकली अपने हिसाब से बोलने लगे कि गुरुजी इतने टाईम में तो ये नहीं होगा। तो गुरुजी ने ऐसा नहीं बोला कि तू क्या समझता है ? होगा, तू कर– ऐसा नहीं, पर गुरुजी ने ऐसा बोला कि अच्छा ये काकाजी की स्वर्णजयंती के महोत्सव पर नहीं हो, तो काकाजी के बर्थ डे तक में तो हो जाएगा। तो उनको (सोचने के लिए) थोडा़ टाईम मिला, और बोला कि इतने टाईम में मैं कर सकूंगा। मगर गुरुजी जब ऐसे फ्लेक्सीबल हो गए, तो अनिलभाई के दिल में से एक भाव उठा कि कुछ करना है। वो करने के लिए बहुत डिजाईन वो ट्राई कर रहा था कि कौन-सी डिजाईन उधर अच्छी लगे, फिट हो– मगर उसके अंदर कुछ आती नहीं थी। तो अनिलभाई ने भगवदी को खोजा। आनंदी दीदी के पास गए और बोलते हैं कि मुझे समझ में नहीं आता है कि मैं कौन-सी डिजाईन करुं जो गुरुजी राजी हो जाएं ? अब आनंदी दीदी तो कोई इंजीनियर हैं नहीं और अनिलभाई को तो इतनी प्रेक्टिस् भी है, कितने कोन्टरेक्ट्स, बिल्डिंग्स बनाई हैं। मगर वो सचमुच दीदी के पास ओपन होकर, खुल्ला होकर गया। तो हम सब सोचें कि क्या दीदी ने ऐसा बोला होगा कि ऐसा-ऐसा बनाओ, ऐसा-ऐसा करो, ये अच्छा दिखेगा। नहीं दीदी ने ये बोला कि आप काकाजी महाराज को, योगीजी महाराज को, स्वामिनारायण भगवान को, गुरुजी को याद करके पाँच मिनिट धून करना और उसके बाद जो भी ख्याल आए वो पकड़ना। देखो एक 'मास्टर की' हो गई और साथ में ये भी बोला कि नहीं आए तो भगवान की मर्जी होगी। **मानो कि कोई आईडिया नहीं आया, वो भी तो महाराज की मर्जी होगी।** मगर फिर अनिलभाई ने धून करके अपने भगवदी की जो सलाह थी, जो प्रेरणा थी उसको पकड़ कर संकल्प किया, प्रार्थना करी तो उसके कम्पयूटर में वो शेप भी आ गया। गुरुजी को दिखाया, तो गुरुजी खुश हो गए। इतना ही नहीं मगर जो अपने आप सोच रहे थे कि नहीं हो सकता है, और काकाजी की बर्थ डे तक हो जाएगा, वो आज हो गया। तो अनिलभाई बोल रहे थे कि ये सब मेरे से नहीं हुआ है, ये गुरुजी ने किया है। मगर गुरुजी ने ये सब अच्छा काम हुआ, उसका यश मेरे सिर पर डाला कि ये अनिलभाई ने किया है। देखो, अनिलभाई भी गुरुजी के प्रति संलग्न हैं, जुड़े हुए हैं और गुरुजी के सीरिज़ ऑफ एक्सपीरिएन्सीस हुए हैं। हम सब को हुए हैं; मगर गुरुजी ये जो बात बता रहे हैं, वो नहीं मानेंगे। **हमारे दिल के अंदर से जब तक ये बनावट नहीं जाएगी, तब तक वो पक्का रस्ता नहीं मिलेगा** और काकाजी भी कहते थे मैं दूसरी रुम में क्या कर रहा हूँ क्या सोच रहा हूँ, वो गुरुजी पकड़ सकता है। काकाजी ऐसा कहते थे, राईट गुरुजी ? वो इसलिए है कि वो पूर्व के हैं और इधर जो गुरुजी को भेजे हैं, वो भी काकाजी ने महाराज की मर्जी जान कर भेजे हैं। और इधर ये सत्संग इतना बढ़ा है, वो इसलिए ही बढ़ा है। आप सब जो हैं वो पूर्व के हो और गुरुजी का जो पूर्व का आपके साथ का संबंध है उसके हिसाब से आप ओटोमेटिकली जुड़े जाते हो। आपके पड़ोस में तो गुरुजी को कोई जानता भी नहीं है, मानता भी नहीं है। उसके पास जाकर भी आप ये मंदिर के लिए, ये सत्संग के लिए बात कुछ

करोगे तो वो मान जाएंगे। आप ऐसा नहीं समझो कि वो कुछ समझता नहीं है, जानता नहीं है, सो क्यों जाएं ? आप जाओ, आप थोड़ा एक्सपेरिमेन्ट करो और वो चैतन्य इधर आकर सेवा में जुड़ जाएगा और यही तो हमारी सेवा है। यही तो हमारा गुरुजी को राजी करने का एक उपाय है, टेक्नीक है। आज **आप सब लोग आए हैं वो एक-दूसरे के ज़रिए आए होंगे।** गुरुजी के वाया-वाया हरिभक्तों के भाव से आए हैं और **वो हरिभक्त** हैं वो **आपके भगवदी हैं, वो अपके गणेश हैं। उसको कभी भी नहीं भूलना,** उसको हर हमेश याद रखना। इसलिए काकाजी ये बात बता रहे थे कि जो **भगवदी है वो बहुत इम्पॉर्टन्ट एन्टिटी है।** भगवान को तो दो हाथ जोड़ कर पांव लग जाते हैं। संत के गेरुए कपड़े देख कर भी दिल में भाव आता है। हमारे अंदर ऐसा प्रोग्राम हो गया है। कोई भी संत को देख कर हम दिल में भाव लाते हैं। बस **अब ये भगवदी के लिए भाव लाएं, हमारा काम हो जाए।** किसी को भी दिल में ऐसा भाव आ जाए और इसलिए अभी गुरुजी ने बताया कि भगवान ने अपने आप को समदर्शी भी नहीं बोला। वो बोलते हैं कि मैं पक्षपाती हूँ, मैं मेरे भक्त का हूँ। और इधर जो भी आए हैं, जो भी लाभ ले रहे हैं वो सब की तरफ गुरुजी का पक्षपात है। हमारा काम ठीक से होने वाला है। हमारे अंदर कोई गलती नहीं हो सकती है। **काकाजी** एक सेनटेन्स बोलते थे– **वी लीड सच ए लाईफ, व्हेर वी कॉमिट नो मिसटेक।** हम कोई भी भूल नहीं करें, ऐसा जीवन जीना है। पर हम ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि हमारे माईन्ड में ऐसा बैठ गया है कि – 'ये करेंगे तो भूल हो जाएगी, ये करेंगे तो ठीक नहीं होगा'। हम पहले से नक्की कर देते हैं कि ये ठीक नहीं होगा। **अब वो मेन्टालीटी को छोड़ कर गुरुभक्ति की मेन्टालीटी को पकड़ना है** कि हे गुरुजी आप मेरे साथ में रहना, आप मेरे साथ में रह कर मैं जो भी करुं, आप उसमें मुझे प्रेरणा देना; फिर उसमें कोई भी गलती नहीं होगी। आपका सब काम जो एक साल में होना होगा, वो एक दिन में हो जाएगा। कितना टाईम बच गया ? और आप प्रयोग भी करना कि कोई चीज खरीदनी है, कुछ करना है तो आप वैसे देखने को जाएंगे तो दस दुकान देखने को जाना पड़ेगा कि कहां भाव कम है, कहां चीज अच्छी है ? और लेंगे तो एक ही दुकान से ना ? मगर गुरुजी को याद करके, काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी को याद करके, महाराज को याद करके आप दो मिनिट धून करके जाना, जो भी स्टोर में जाओगे– वो ही अच्छी क्वालिटी वाला और कम प्राईसवाला मिलेगा। और आपको डाऊट हो तो एक-दो बार और जगह पर भी देख लेना कि यह है कि नहीं। ऐसा नहीं कि मैं बोलता हूँ और आप मान जाओ। मगर ये प्रयोग– 'पहले प्रभु फिर पगलुं'– गुरुजी ने बहुत अच्छा ये सूत्र पप्पाजी का हमारे लिए रखा है। **हम पहले प्रभु को याद करें और फिर स्टेप लेंगे, तो कभी भी मिस्टेक नहीं होगी।** सो, काकाजी बता रहे हैं–वी लीड सच ए लाईफ, व्हेर वी कॉमिट नो मिस्टेक। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. गुरुजी

मैं एक बात करता हूँ जो अभी दिनकरभाई ने करी। मेरी बात शायद आपको बुरी लगेगी कि क्या हमें फिर के.जी. में बैठ जाना है ? इन्टर तक तो हम आ गए हैं और तुम कहते हो कि फिर के.जी. में चले जाओ। लेकिन उसमें अपनी जीत है। अभी घनश्याम ने बात करी ना कि ये मान लिया जाए कि हम ब्रह्मरुप हैं। मैं इसमें क्या मानता हूँ कि **काकाजी के साथ हमारा संबंध था, है जरुर, हमें वो भा भी गए थे। लेकिन उनको समझने में ही हमारी कोई रेडीकल मिस्टेक हुई है।** हकीकत में मिस्टेक हुई, **नहीं तो काकाजी की बात को हम सही क्यों नहीं समझें** ? मतलब सच्ची क्यों नहीं मानी गई ? काकाजी कितनी बार बोले थे कि संजय लड़का किसका ? संजय लड़का किसका ? हम सब सुनते थे, मैंने भी उस चीज को तब नहीं समझी, **समझी तो मानी नहीं। मानी, तो तब भी ऐसा रहा कि काकाजी तो कहें लेकिन ऐसा थोड़े होता है ?** कल ये दिनकरभाई ने बात करी, वैसे वह छुपा नास्तिकभाव था हमारा– श्रद्धालु नास्तिक हैं हम। बस ये शिविर में दो चीज पक्की करके जाएं कि एक तो सच में हमें मानवस्वरूप में प्रभु मिले। **काकाजी को हमने माना लेकिन– बहुत होशियार; बहुत पहुँचे हुए। परंतु वो तत्त्व ही कुछ अलग था,** हमारे में और उनमें इतना फर्क है–जितना हमारे में और जानवर में है। बीच में हम, एक तरफ जानवर और एक तरफ काकाजी। हमारे में और जानवर में जितना फर्क है, इतना हमारे में और काकाजी में फर्क है। एन्टायर योनि ही अलग है। हम जैसे भले वो दिखाई पड़ें; मानो कुत्ता जब हमें देखता होगा क्या सोचता होगा ? अगर उसमें थिंकिंग पॉवर हो, तो वो यही सोचेगा ना कि वो हमारे जैसा ही है। ये भी खड़ा होकर चलता है एट्सेट्रा-एट्सेट्रा। लेकिन ये योनि ही पूरी अलग है, उसका उसे ख्याल नहीं पड़ेगा। इस तरह हमें ख्याल नहीं है कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी ये सारी एक योनि अलग है। **हमने गाया**, परोक्ष में भी गाया कि **'गोकुल गांव को पिंडो न्यारो'; लेकिन माना हमने किसी ने नहीं।** अगर माना होता कि काकाजी यानि–

मानवस्वरूप में प्रभु ! तो काकाजी खुद बोलते कि भगवान एटले शुं खावानुं चिभडुं ? हम भी उस समय हँसते थे, लेकिन उस बात पर सोचा नहीं कि ओहोहो, काकाजी हमें कैसे टोने मार रहे हैं कि तमे बोलो छो प्रभु, पण शुं मानो छो ? फिर खुद बोलते थे– **भगवान पल में चाहे सो करें। ये हमने कभी माना क्या ?** काकाजी की जो बेज़िक बातें, जो मैं कहता हूँ ना कि मानवस्वरूप में प्रभु; प्रभु यानि प्रभु मानें। फिर हम चाहे कैसे भी हों। ऐसा भी रहेगा कि आज ये बातें सुन कर अभी शुरुआत करें, लेकिन कितना टाईम चला गया ? बहुत गई, अब थोड़ी रही। लेकिन, यहां एक बात पक्की समझना कि गवर्नमेन्ट की भी एक स्कीम होती है– रिएम्बर्समेन्ट स्कीम। ऐसा नहीं कि अब शुरुआत करेंगे, अब गाड़ी चलेगी। नहीं ! पिछला सारा एक साथ में वापिस आने वाला है। **कोई टाईम बिगड़ा नहीं है।** मैं तुम्हें शायद यह समझा नहीं पाता हूँ। लेकिन ऐसा नहीं है कि काकाजी के टाईम पर अगर हम वर्तते तो कितने एडवान्स हो चुके होते। **अभी शुरुआत करेंगे तो भी वीथ फुल एडवान्समेन्ट-वो रिज़ल्ट देते हैं।** सो, बेज़िक प्रिन्सीपल को समझें। ये शिविर में दूसरी कोई कथा करनी नहीं है। एक बात कि इनको **प्रगट मान करके स्विच ऑन करने की हम एक हेबिट डाल दें।** हम बोलते हैं लेकिन करते नहीं हैं। करेंगे तो इमिजिएट रिझल्ट मिलेगा–जैसे कि वी कमिट नो मिस्टेक। ये आजमा कर देखना कि जब हमें दुविधा होती है कि ये करना चाहिए था, ये नहीं करना चाहिए था; क्या करें क्या नहीं करें ? तब इतना तो पता है ना कि इनको याद करके करो। इनको याद करके, इनका सिमरन कि – पहले प्रभु फिर कदम। **लेकिन हम यह नहीं करते। हम फट् से कुछ कर लेते हैं, फिर एकदम याद आएगा कि पलभर सिमरन करना तो भूल गए ! और मन कहेगा कि अब आगे से पहले याद करेंगे।** अच्छा है, लेकिन वो अपनी गलती तो है ही कि याद नहीं करते। याद करके करें तो 'वी कमिट नो मिस्टेक' कैसे होता है उसका एक एग्ज़ाम्पल देता हूँ; ये दिलीपकुमार साक्षी है। यहां ये एग्ज़ीबीशन के फोटोग्राफ्स की सारी नेगेटीव्स उन्हें दी थी और मैंने कहा था कि ये करना है। पर जल्दबाजी में इनको कहना भूल गया कि हर फोटोग्राफ शेपिया कलर में करना है। मेरे दिमाग से वह बात उतर ही गई थी। लेकिन इतना था कि मैंने जब इनको दिया था तो काकाजी को याद करके दिया था। काकाजी के जाने के बाद अगर होश आई हो, तो ये आई है। इसका रिज़ल्ट क्या आया, वो देखना। मैं तो इनको कहना भूल गया कि शेपिया में निकालनी है और ये ब्लेक एंड व्हाईट की नेगेटीव थी, तो वो ब्लेक एंड व्हाईट ही निकालेगा। वो गया अमदावाद। वहां के हालात तो तुम जानते हो-रायट ! वहां पता लगा कि यहां ब्लेक एंड व्हाईट फोटोग्राफ्स के पेपर्स हैं ही नहीं। अभी इंडिया में कहीं भी नहीं है, दिल्ली में भी नहीं मिलेगा। फिर इन्होंने सेटिंग करा कि कलर पेपर्स पर करेंगे, लेकिन वो हमें शेपिया कलर के निकालने पड़ेंगे। ब्लेक एंड व्हाईट में नहीं निकलेगा। और इनका फोन आया। मैंने कहा यही अच्छा हुआ, पेपर मिल जाता तो तुम ब्लेक एंड व्हाईट में निकाल लाते और हमें चाहिए थे शेपिया में। हमें मिस्टेक नहीं होने दी ना ? ये बहुत छोटा एग्ज़ाम्पल है, लेकिन हर एक चीज में आप आजमाओ तो सही। **काकाजी** के बारे एक बात पक्की समझना; वे अपने जैसे नहीं थे। भले दिखाई पड़ें अपने जैसे। दूसरी बात– **वो हमें सभी चीज वैसे ही दे सकते हैं। हमें इस बात का भी भरोसा नहीं है।** अरे ! **ऐसे ही मिलता होगा क्या ? कुछ करना तो पड़े।** श्री रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथानंदजी का एक सेन्टेन्स काकाजी ने मुझे पढ़वाया था कि देख ये क्या लिखा है ? 'धी स्पीरीच्यूलीटी केन बी ट्रांसमिटेड एज़ आई केन गिव अ फ्लावर टु यू'। फिर बोले राजा ! बापा ने हमें ये बख्शिश में दिया है। लेकिन **हम मानते थे कि बड़े-बड़े शब्द, अच्छी-अच्छी बातें काकाजी बोल जाते हैं, हमें सुननी हैं।** पर, **वो बात की सच्चाई हमने कभी मानी नहीं। इसलिए परख में नहीं आई,** अब हमें वो परखनी है। परखनी है का मतलब टेस्ट नहीं करनी है, चखनी है; चखेंगे तो स्वाद आएगा। फिर हमें खाने की लालसा बनती जाएगी। तो, ये शिविर के फलस्वरूप और कुछ नहीं करना है, इन्होंने जो कुछ बातें करी हैं, वो ये दिनकरभाई का भरोसा रख करके, मेरी बात को थोड़ी मान करके इतना विश्वास करें कि काकाजी जो मिले हैं, वो हमें सब कुछ देने वाले हैं। **इनकी बातों को हम सही मानें, जो हम मानते नहीं हैं।** काकाजी एक बात करते थे कि रीट्रीट में बड़ी ताकत है, फोर्स है। जेस्चर करके वो बताते भी कि यह नेपकिन यूं डालें तो कितनी दूर जाएगा ? यूं डालेंगे तो कहां तक जाएगा-ऐसा वो दिखाते थे। हम भी खुश होते थे कि काकाजी ने अच्छी मूर्ति दी। मेक्झीमम हमारी बिलीफ यह रहती थी, पर हम उसकी सच्चाई मानते नहीं थे। **अगर हम सच में मानते, तो मुक्तों के पास रीट्रीट हो जाते।** हम नहीं होते, पर अब आजमा कर देखेंगे कि अगर हम मुक्तों के पास रीट्रीट होंगे, तो हमारा फोर्स खूब बढ़ जाता है और जो हम चाहते हैं कि वो मुक्त ऐसा करे, वो इससे भी ज्यादा झुक कर हमारे साथ रहने लग जाएगा। लेकिन– **वो क्या समझता है ? – यह अहं आता है; इसलिए अपना फोर्स काम नहीं करता है। ये बुनियादी बातें, रेडिकल बातें-प्रिन्सीपल बातें** जिसे कहें, वो **ये शिविर में से लेकर जाएं, तो अपनी ये काकाजी की स्वर्णजयंती मनाई सार्थक हो गई मानना।** बस दिनकरभाई ऐसे आशीर्वाद दें, स्वामिजी आएं तब तक में ऐसी बातें समझाएं कि आखिर हम चलने तो लग ही पड़ें, शरम के मारे भी लग ही पड़ें ऐसा कर दो...

...ऑपोर्च्युनिटी इक्वल है, पर भगवान समदर्शी नहीं हैं। वो सिर्फ भक्तों का है, हम कैसे भी होंगे लेकिन औरों की अपेक्षा प्रभु हमारे ही होंगे। दूसरों की नहीं चलेगी, चलेगी अपनी ही। सो समदर्शी क्या कि ऑपोर्च्युनीटी सभी को दी जाती है, वो समदर्शी। पंडित हो, अंगूठाटेक हो, स्त्री हो, पुरूष हो, शहर का हो, गांव का हो, ऊँच हो, नीच हो, छोटा बच्चा हो या बुजुर्ग हो– वो मौका सब को देते हैं। लेकिन उसमें फिर जो उसके होकर रहेंगे, उसके वो पहले...

देखो, काकाजी के प्रवचन में जब कहीं ऐसे लेडिज़ बैठी होंगी, बातें होती होंगी-इन्होंने ज्योति बहन वगैरह को खूब याद करा है। इन्होंने सच में ऐसा जीवन जीया हुआ है। कई बातें तो तुम्हें पता नहीं हैं। मैं एक बात करता हूँ । सोचना कि अगर काकाजी या अभी दिनकरभाई वगैरह हमारे साथ ऐसा करें तो जो ज्योति बहन ने करा वो सच में हम करेंगे क्या ? लौकिक ढंग से अगर अपनी गलती ना हो और अगर दिनकरभाई कुछ डाँट देंगे, तब तो हम समझ लेंगे कि ये मेरा टेस्टिंग कर रहे हैं और बड़े सावधान होकर करके, सावधान नहीं– बड़े सयाने होकर करके हँसता मुँह रखेंगे। कहेंगे– दिनकरभाई ने लीला करी, दिनकरभाई ने टेस्टिंग करा। लेकिन अगर हम गलती में होंगे; एक बात समझ लेना **साधु की ये रीत है, तुम्हें थोड़ी गलती करने देगा। फिर वो गलती को लेकर वो तुम्हें डाँटेंगे और तब तुम्हारा मन साधु से नहीं हटे, वो तुम्हारा साधु के साथ का पक्का संबंध है।** यूं हम गलती में हों और फिर दिनकरभाई डाँटें और तब भी हम मानें कि नहीं, ये तो मेरे फेवर में ही हो रहा है। वो टेस्टिंग में पास ! काकाजी ने इस तरह इनके साथ बिहेव किया। काकाजी को जब साक्षात्कार हुआ... तो काकाजी तो उपशम में रहते थे और इसी बारे बापा से बातें करने के लिए बा वगैरह अटलादरा गए होंगे। योगीजी महाराज ने फिर एक काग़ज़ लिख करके काकाजी के नाम दिया और बा को कहलवाया कि दादुभाई को देना है। अब उस समय ये चेप्टर चलता था और ये लेटर ! तो वैसे तो काकाजी को कुछ पता था नहीं कि खोल करके ये लेटर पढ़ा हुआ है, पर काकाजी को तो सब कुछ दिखाई पड़ता था। जैसे ही वो लेटर रखा, काकाजी ने वो लेटर वापिस दिया कि तुम क्या समझते हो ? मेरा लेटर मुझे पूछे बिना खोला कैसे ? ये तो सब सन्न हो गए ! फिर ज्योति बहन-तारा बहन को कहते हैं– अब प्रायश्चित के रूप में मैं नहीं कहूँ तब तक सीढ़ियाँ चढ़ो और उतरो। ताड़देव के चार जीने ! और मैंने सुना है कि फिर काकाजी कुछ बीज़ी हो गए, सो– वह बात ध्यान से उतर गई और सुबह से शाम तक ये दोनों चढ़ती रहीं-उतरती रहीं, चढ़ती रहीं-उतरती रहीं। मेरे ख्याल से मैं कोई बढ़ा-चढ़ा कर बात नहीं करता। मैं कहता हूँ– सुबह से लेकर शाम तक नहीं होगा, तो अगर सुबह से दोपहर तक भी कोई अपने को कह दे तो ? चार जीने चढ़ने-उतरने ! काकाजी का लेटर खोला था ना, इसकी वे सजा दे रहे थे। हमारा दिव्यभाव रहेगा क्या ? सच में सोच लेना। आज ये इन्सीडन्स सुना है इसलिए शायद अब हमें कहें तो वो करेंगे। लेकिन और कोई बात पर अलग ढंग से डाँटेंगे और पनिशमेन्ट देंगे, तब वो भावना रहेगी क्या– जो ज्योति बहन और तारा बहन ने रखी होगी ? **हमें तो थोड़ी-थोड़ी बात पर बुरा लग जाता है।** गलती तो करी थी। गलती करने दी; वर्ना वहीं प्रगट होकर नहीं बोल सकते थे कि ख़बरदार यदि काग़ज़ खोला तो ? वो भी ताकत थी, पर वो नहीं करा। काकाजी ने एक किताब लिखवाई थी– 'एप्लाईड बह्मज्ञान'। ये **सारा ब्रह्मज्ञान जो हमने काकाजी से सुना है, वो अभी हम एप्लाई करने लग जाएं, ताकि इनको वो ही चीज रीपीट ना करनी पड़े।** यू टर्न लेकर के – यू टर्न लेकर के – यू टर्न लेकर के हम चलने लग पड़ें, यही भावना...

ये परम सत्य का यानि– **'मानवस्वरूप में ये काकाजी, ये पप्पाजी, ये स्वामिजी हमें प्रभु मिले हैं'– इस परम सत्य का सच में हमें स्वीकार है ?** हम बोलेंगे, पर सच में मानते नहीं हैं। अगर है, तो हमें चिंता होगी नहीं। अगर है, तो हमें एक्साईटमेन्ट होगी नहीं। अगर है, तो हम डूबेंगे नहीं... ये समझने की बात है।

...व्यक्ति उसकी लेन्गवेज से पता लगती है। आप पत्रिका पढ़ते होंगे, ये पत्रिका प्रिन्ट होने के बाद मेरी नज़र में वो शब्द आया। एक जगह पर मैंने लिखा है कि आज स्वामिनारायण संप्रदाय अलग-अलग 'गुटों' में बंटा हुआ है। काकाजी ने बात वही करी है – गुणातीत समाज अलग-अलग 'प्रवाहों' में बंटा हुआ है। देखो मैंने शब्द यूज़ करा 'गुट', काकाजी ने शब्द यूज़ करा 'प्रवाह'। ख़ानदानी में फर्क पड़ जाता है। सो, हम **कभी भूलें नहीं कि हमारी भाषा, हमारा व्यवहार गुणातीत ख़ानदानी से हुआ करे।** ये छोटी-छोटी बातें मैं इसलिए करता हूँ कि **हम खूब सावधानी से जीएं, अब वो बचपने में ना रहें; हमारी जिम्मेवारी खूब है...**

ये बात भी एक समझनी है कि **पहले स्वीकार करो कि हमारा मन बंदर है।** एक वचनामृत है सत्पुरूष के गुण आने का। ये बात काकाजी ने एक बार बहुत अच्छी तरह समझाई थी। **काकाजी बहुत बड़े हैं वो तो बराबर है। लेकिन साथ-साथ हम समझें कि 'हम न्यून हैं'**, तब वो गुण अपने में आएंगे। खाली संत को बड़े समझने से नहीं होगा। 'हम न्यून हैं'– यह भी मानना है, लेकिन हम नहीं मानेंगे। **हम क्या मानते हैं कि ठीक है - संत बड़े हैं, लेकिन हमारा इतना तो सच्चा है।** स्वामी की एक बात है कि दूसरे को तो 'काम' परेशान नहीं करता, मुझे अकेले को ही परेशान करता है। **हम क्या मानते हैं कि मुझ में तो है, पर**

उसमें भी तो है। वो कौन-सा दूध का धुला है ? कई बार मन में हम सांत्वना ले लेते हैं कि ये सब भाव तो सभी में होते ही हैं... नहीं, अगर हमें संत से चीज बख़्शिश में ले लेनी है... तो हम भजन करके, कुछ भी करके ये एक पक्का रखें कि सामने वाला निर्दोष है, गलती मेरी ही है। तो **उसका जो होना होगा-होगा, लेकिन काकाजी हमें अपने निर्दोषभाव का एहसास करा देंगे**; हम निर्दोष तो हैं ही। हमें एहसास नहीं होता इतना ही फर्क है, वो एहसास करने के लिए यह प्रोसिज़र है। **उसको निर्दोष मानो, हमें एहसास हो जाएगा कि हम निर्दोष हैं।** हम मानें तो वेल्कम, ना मानें तो महाराज के पास भीड़ कम...

ये बात भी एक समझना कि **ये सारी बातें अपने यहां ही संभव हैं।** दूसरों की टीका-चर्चा करने के लिए या ये छोटा-बड़ा ये दिखाने के लिए यह नहीं कहता, पर **अपने यहां 'प्रभु' प्रगट हैं। दूसरी जगह प्रभु मानवरुप में प्रगट नहीं हैं।** काकाजी बड़े चालाक थे, वो क्या बोलते थे कि–

'तुम माता को मानो, महादेव को मानो, कृष्ण को मानो, राम को मानो लेकिन– टोटल मानो; लेकिन वो तुम्हारा राम और तुम्हारा कृष्ण, तुम्हारी माता, तुम्हारे महादेव मानवस्वरूप में प्रगट होने चाहिए। तब तुम्हारे कुरुक्षेत्र का, जैसे अर्जुन के कुरुक्षेत्र का अंत मानवस्वरूप में उसका सारथी कृष्ण उसका मौजूद था तो मिला, वैसे तुम्हें मिलेगा।'

देखो, बड़ी चालाकी से ये बात करी है ना कि तुम सिर्फ हमें ही मानो। क्योंकि स्वामिनारायण के सिवा मानवस्वरूप में वो देवी– वो देवता कहीं प्रगट नहीं हैं। आज ये बात मैंने सभा में खुलकर कर दी। देखो, इसमें लिखा है ना डायरी में, काकाजी का ये स्लोगन है–

'आप किसी को भी मानो– पर, उसे टोटल मानो... '

एक तो **हम टोटल मानते नहीं हैं, श्रद्धालु नास्तिक हैं, पार्श्यल मानते हैं।** हमारा कैसा है कि **हम फ्लूफ गेम पर चलते हैं।** 'चलो– परिक्रमा करके देखो'– **होवे तो ठीक है, नहीं तो** क्या बिगड़ा ? कम से कम **कहने को तो चलेगा कि तुमने जो कहा वो करा, लेकिन कुछ हुआ नहीं**; इसलिए करते हैं कई तो। हो जाए तो ठीक है, नहीं होगा तो **संत को दोष देने में तो काम आएगा कि हमने तो करा लेकिन कुछ हुआ नहीं !**

दूसरा तुम्हारे वो देवी-देवता मानवस्वरूप में मौजूद होने चाहिएँ। जैसे अर्जुन के सारथी कृष्ण मौजूद थे, प्रगट थे तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया। भगवान स्वामिनारायण की ये बेमिसाल देन है कि उन्होंने ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों द्वारा मानवस्वरूप में अपनी मौजूदगी अखंड रखी। सो, मैं ये बात कर रहा था कि ये जो सारी आज बातें करी, वो दूसरी जगह संभव ही नहीं है-शक्य ही नहीं है। यह कैसा है कि छोटा बच्चा जानता नहीं होता है, लेकिन वो भी टी.वी. का बटन ऑन कर दे तो पिक्चर दिखाई पड़ना शुरू हो जाता है और वो खुश हो जाता है। वैसे महाराज - काकाजी को -प्रगट स्वरूप को याद करके-संकल्प करके जो भी भजन करेंगे, काम होगा ही। और कोई नई बात है नहीं। यूं वो चीज अज्ञान में भी हो जाती है, तो अगर हम समझदारी से चलें तो हर बात पर ग्रीन लाईट मिलती रहेगी। लेकिन हम करते नहीं हैं और परोक्ष उपासना वाला कोई करेगा, तो यह नहीं होगा, भले कितना ही करा करेगा ना। भजन करा करो संस्कार पड़ते रहेंगे।

स्वर्णजयंती हमें इसलिए मनानी है कि काकाजी ने एक संकल्प कर दिया कि मेरे साथ जो जुड़े हुए हैं, मेरे संबंध में जो आए हुए हैं-वे जो सुख आज मैं ले रहा हूँ, इन सभी को मिले। **उनके संकल्प के कारण प्रकृतिपुरुष से पर के वो सुख जो– आज हम ये ग्रुप के अंदर–ये कबीले के अंदर जो हैं, उन्हें प्रकृति के भावों से पर होकर जीने की संभावना बन सकती है।** वो सुख का लाभ हम ले सकते हैं अगर हम चाहें तो; हमें नहीं चाहना है तो बात अलग है...

सो, हम अभी तय कर लें, डिसाईड कर लें कि करना है ? अपने को सच में सुख लेना है, तो मैंने कोई नई बात तो करी नहीं। दिनकरभाई ने कहा ना कि काकाजी यही बात करते थे। कहते थे कि मानवस्वरूप में हमें प्रभु मिले हैं, वो प्रभु कैसे ? वो मानो।

ये हमारा महेता सेठ मुझे बहुत अच्छा लगा कि उसको एक श्रद्धा है कि जो गुरुजी कहते हैं वो सही है। मैंने उन्हें एक बात कही है, कोई भी काम करो– तो तुम अभी वहम में नहीं जाओ। अगर गलत कदम उठा भी लिया होगा, पर प्रभु को याद करके हमने कदम उठाया होगा ना तो रोकने का काम प्रभु का है। डायरेक्शन देकर या धक्का मार कर भी तुम्हें राईट डायरेक्शन में रख देंगे। दूसरा– कभी मुक्तों के साथ भिड़ो नहीं और अगर तुम्हें अपना काम प्रभु से निकलवा लेना है, तो मुक्तों के पास झुक जाओ। तुम्हारा काम तुम चाहते हो या हम चाहते हैं उससे भी कई गुणा अच्छा और इन ए मच मोर डिग्नीफाईड वे में वो करके देते हैं। ये आजमाई हुई, अनुभव में से जबरदस्ती गुज़ार कर काकाजी ने दिखाई हुई बात है। बस, ये करने लग जाएं-तो काकाजी की स्वर्णजयंती खूब मनाई और काकाजी कहेंगे वाह-वाह !

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीवर्चन एवं प्रवचन– क्रमशः)

‘ताड़देव की गतिविधियाँ’

◆ 31 मार्च 2003 को हमने प.पू. काकाजी महाराज के **साक्षात्कार की स्वर्णजयंती** व प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन दिल्ली में मनाया। तब **प.भ. महेन्द्र कपूरजी** व उनके सुपुत्र **प.भ. रोहन कपूर** ‘भजन’ गाने दिल्ली आए थे... उत्सव के इस आत्मीयता भरे माहौल को व प.पू. गुरुजी की साधुता से खूब प्रभावित होकर उन्होंने इतनी जोश-भक्ति-उमंग से भजन गाए कि सभी जैसे जगत-समय भूल कर जोर-जोर से तालियाँ बजा कर झूमने लगे। उस समय भजनों का लाईव रिकॉर्डिंग ठीक से नहीं हो पाया। फिर इस बारे प.भ. महेन्द्र कपूरजी से बातचीत होने पर महेन्द्रजी ने खूब अपनेपन से कहा कि वे इन भजनों की हम स्टूडियो में रिकॉर्डिंग करवा लेंगे और... मुंबई में प.भ. महेन्द्र कपूरजी व रोहन कपूरजी ने स्टूडियो वगैरह की सारी व्यवस्था भी कर ली और प.पू. गुरुजी को आने के लिए संदेश भिजवाया ! दूसरी ओर प.पू. गुरुजी की भी दिली ख़्वाईश-इच्छा थी कि प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्णजयंती के वर्ष में मैं ‘ताड़देव’ दर्शन कर आऊं। इस प्रकार वापी, सुरत, मुंबई जाने का प्रोग्राम प.पू. गुरुजी ने निश्चित् किया...

29 जुलाई की राजधानी ट्रेन से मुंबई जाने निकल कर वापी में प.भ. भगवतीप्रसादजी, प.भ. ज्योतिनभाई, प.भ. महेन्द्र पटवारीजी, प.भ. वीरेनभाई पटेल आदि भक्तों के संग 30, 31 दो दिन वापी रहे और 1 अगस्त को कर्णावती ट्रेन से मुंबई जाने निकले... दोपहर को प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के यहां पहुँचे... ठाकुरजी का थाल करके सभी ने प्रसाद लिया... शाम को प.भ. अनिलभाई भिण्डे के यहां होकर प.भ. महेन्द्र कपूरजी के यहां सायं ठाकुरजी का थाल किया।

प.भ. महेन्द्रजी व परिवार का प.पू. गुरुजी के साथ व्यवहार देख कर ऐसा लगता है कि जैसे मानो कई जन्मों का पुराना संबंध हो। यह देख कर प.पू. काकाजी की एक बात भी स्मृतिपटल पर उभर आई कि हमारे संबंध में चाहे कोई किसी भी काम से आए, तो उसके भीतर प्रभु बस जाने चाहिए। सिर्फ काम निकाल लेना ही अपना मकसद नहीं होना चाहिए... उसका प्रभु व संत के साथ एक संबंध बन जाना चाहिए। उसके साथ हमारी कोमर्शियल एटीट्यूड नहीं होगी, हमारी सचमुच सिन्सियारिटी होगी तो उसे वह टच होगा। इतने सालों से हमने देखा है कि प.पू. गुरुजी के संपर्क में जो भी किसी भी वजह से संपर्क में आए, वे बाद में मंदिर से एक आत्मीयता के रिश्ते से जुड़ ही गए... यहां तक कि मंदिर की बिजली, पानी, सीमेन्ट वगैरह की सप्लाई देने वाले भी जुड़ते गए। **यही तो है– प.पू. गुरुजी की बेमिसाल साधुता का दर्शन-प्रमाण** !

2 अगस्त की सुबह ‘पवई’ गए... दोपहर का ठाकुरजी का थाल वहां किया। पू. भरतभाई, पू. राजुभाई भट्ट, पू. राजुभाई ठक्कर, पू. हरखचंदभाई, पू. घनश्यामभाई अमीन आदि के साथ दोपहर का भोजन करके रास्ते में प.भ. भावेशभाई देसाई (घाटकोपर) के घर होते हुए वापिस प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के घर आए। शाम को प.भ. अग्रवालजी ने अपने यहाँ ही एक छोटा-सा गेट टु गेधर रखा था। उसमें आस्था चैनल के डिरेक्टर श्री अजीत गुप्ताजी, ‘चाणक्य’ सिरियल के प्रोड्यूसर श्री प्रकाशभाई द्विवेदी, टी.वी. एंकर रुबी भाटिया, स्टार प्लस की सीरियल ‘कहानी घर-घर की’ के अभिनेता श्री राजीव पॉल, श्री अली अस्गर तथा अग्रवालजी के अड़ौसी-पड़ौसी ने सत्संग का-प.पू. गुरुजी के दर्शन का लाभ लिया।

3 अगस्त को प.भ. महेन्द्र कपूरजी व रोहन कपूरजी के साथ भजनों की रिकॉर्डिंग करवा कर रात करीब डेढ़ बजे प.पू. गुरुजी वापिस आए। 4 की सुबह प.भ. निरंजनभाई के साले **प.भ. कनुभाई दवे** के नए फ्लैट में पधरामनी के लिए डोम्बीवली गए। दोपहर को ठाकुरजी का थाल वहाँ धराया। रात को डोम्बीवली से वापिस आकर फिर स्टूडियो में गए क्योंकि वहां प.भ. महेन्द्र कपूरजी व रोहन कपूरजी बाकी भजनों की रिकॉर्डिंग कर रहे थे। वहां से करीब रात को 2 बजे वापिस आए... प.भ. महेन्द्रजी व उनके सुपुत्र रोहनजी की भावना व इतना अधिक निजी श्रम सभी के दिल को खूब स्पर्श कर जाता था।

5 अगस्त की शाम को ताड़देव में एक छोटी घरेलू सभा में प.पू. गुरुजी, पू. भरतभाई ने बातें करी... पू. निर्मलस्वामिजी भी ताड़देव पधारे थे। 6 की सुबह तो प.पू. गुरुजी ‘शताब्दी’ से सुरत आने निकले। सुरत में प.भ. वडिया साहेब के यहां दोपहर को ठाकुरजी का थाल किया और प.भ. हरिशभाई वखारिया के यहां आराम करके शाम को

प.भ. किशोरभाई देसाई (प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम की बुआ के लड़के) ने अत्यधिक भावविभोर हृदय से करीब 70-80 जनों का छोटा गेधरिंग रखा था, वहां भजन आदि गाने के बाद सभी ने प्रसाद लिया और रात की अगस्त क्रांति ट्रेन से दिल्ली वापिस आने निकले। प.पू. गुरुजी के साथ आए सभी को वापी, मुंबई, सुरत के हरिभक्तों की सेवा, भक्ति, भावना, आत्मीयता अत्यधिक स्पर्श कर गई... सभी की सेवा को अंतर से धन्यवाद !

◆ पिछले थोड़े दिनों से ऐसी खबर आ रही थी कि प.पू. पप्पाजी की तबियत अच्छी नहीं है। सो, प.पू. गुरुजी की दिली इच्छा हो रही थी कि मैं प.पू. पप्पाजी के दर्शन कर आऊं... फिर खबर आई कि प.पू. पप्पाजी चेकअप के लिए अमदावाद आ रहे हैं। सो, प.पू. गुरुजी ने 25 अगस्त की सुबह की फ्लाईट से अमदावाद जाने का प्रोग्राम बनाया। यहां से सहज ही **प.भ. विनोदभाई – प.भ. प्रकाशभाई** ने अमदावाद में अपने मित्र **प.भ. कन्हैयालालजी** को प.पू. गुरुजी के अमदावाद आने की सूचना दी और प.पू. गुरुजी के लिए गाड़ी की सुविधा करने कहा। संजोगवश प.भ. कन्हैयालालजी की गाड़ी बिगड़ गई थी। उन्होंने वो गाड़ी ठीक करने तो दे दी। मीकेनिक ने कहा कि 99 प्रतिशत तो गाड़ी समय पर ठीक हो जाएगी। पर, प.भ. कन्हैयालालजी के मन में ऐसी दुविधा रही कि यदि गाड़ी समय पर नहीं मिली तो ? और... प.पू. गुरुजी को थोड़ी भी तकलीफ नहीं पड़नी चाहिए, इस भावना से उन्होंने सेफ साईड पर नई गाड़ी ही खरीद ली ! सच ! संतों के प्रति भक्तों की सेवा-भावना देख कर एक ओर दिल श्रद्धा से झुक जाता है, अंदर से गिलगिला जैसा हो जाता है, आँखें अपने आप नम हो जाती हैं। तो, दूसरी ओर यह भी विचार सहज आता है कि दिल्ली के प.भ. विनोदभाई व प.भ. प्रकाशभाई ने प.पू. गुरुजी की कैसी महिमा गाई होगी या उनका वर्तन प.भ. कन्हैयालालजी को कैसा स्पर्श कर गया होगा, जो उन्हें एकदम नई गाड़ी की ही सुविधा करने का विचार आया।

प.पू. पप्पाजी तो अमदावाद से सारा चेकअप कराके विद्यानगर चले गए थे। सो, 25 अगस्त को रविवार होने के कारण प.पू. गुरुजी अमदावाद के सभी भक्तों को मिले। 26 की सुबह विद्यानगर प.पू. पप्पाजी की तबियत देखने गए। प.पू. पप्पाजी भी प.पू. गुरुजी को देख कर खूब खुश हो गए। गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की तबियत वैसे अभी अच्छी है, पर फिर भी हम सब को तीव्र भजन चालू रखना है, ताकि ऐसे गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया हम सब पर खूब वर्षों तक बनी रहे। वहां से प.पू. गुरुजी शाम को वापिस अमदावाद प.भ. निरंजनभाई दवे के यहां लौट आए और 27 की शाम को तो राजधानी ट्रेन से वापिस दिल्ली लौटने निकले...

◆ श्रीजी महाराज ने स्वामिनारायण संप्रदाय के नियमों की सार रूप पुस्तक 'शिक्षापत्री' में भगवान श्री कृष्ण की भक्ति–महिमा बारे उल्लेख किया हुआ है।

'शिक्षापत्री' के 79वें श्लोक में ऐसा लिखा है कि हमारे सभी भक्तों को एकादशी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा शिवरात्रि के दिन आदरभाव से व्रत करना चाहिए। इन समस्त अवसरों पर उत्सवों का आयोजन किया जाना चाहिए।

श्रीजी महाराज द्वारा उद्‌बोधित शिक्षापत्री के लिखे वचनों से स्पष्ट दर्शन होता है कि धर्म में कभी भी संकुचितता, जड़ता का स्थान नहीं होना चाहिए। सच्चा धर्म कभी भी संकुचितता के दायरे में सीमित नहीं रहता...

भगवान स्वामिनारायण के इन्हीं सिद्धांतों को लेकर 31 अगस्त को 'ताड़देव' में '**श्री कृष्ण जन्माष्टमी**' खूब ही धूमधाम-हर्षोल्लास से मनाई ! मंदिर को लाईटिंग से सजाया था और भगवान श्री कृष्ण के भजनों की कैसेट पूरे मंदिर में गूंज रही थी। यूं श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर 30, 31 अगस्त दोनों दिन सहज ही सबके आर्कषण का केन्द्र बना था। ऊपर ठाकुरजी के हॉल में मूर्तियों के आगे एक छोटा-सा उद्यान जैसा बना कर उसमें भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं की विभिन्न झांकियाँ लगाई थी। साथ ही आम के दो घने वृक्षों के बीच लगे झूले में श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति अत्यंत लुभावनी लग रही थी। हॉल में लोहे की सलाखों से बना 'कारागृह' भी बनाया था। पाँच हजार साल पूर्व की जेल का पुट देती इस झांकी में वासुदेव - देवकी और भगवान श्री कृष्ण के जन्म के समय का दृश्य अत्यंत बहुत ही जीवंत रूप लिए हुआ था। जेल की दीवार पर एक मार्मिक सूत्र भी लिखा था–

'जेल की सलाखों के पीछे जन्म से लेकर शल्य के आघात से मृत्यु तक का अवतार विभूति भगवान श्री कृष्ण का जीवन अणु से विराट व महामानव होने के लिए एक आदर्श है।'

रास्ते से गुजरते सभी लोगों का आज तांता जैसा लगा था... सभी ने यह अद्‌भुत दर्शन करके खुद को धन्य किया।

▣

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 17.9.2003,	मंगलवार	–	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(2)	दि. 18.9.2003,	बुधवार	–	वामनजयंती
(3)	दि. 20.9.2003,	शुक्रवार	–	अनंत चतुर्दशी – गणेशविर्सजन
(4)	दि. 25.9.2003,	बुधवार	–	ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(5)	दि. 1.10.2003,	मंगलवार	–	श्रीजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(6)	दि. 2.10.2003,	बुधवार	–	ब्र. स्व. योगीजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(7)	दि. 3.10.2003,	गुरुवार	–	एकादशी, ब्र. स्व. काकाजी महाराज – श्राद्ध तिथि
(8)	दि. 4.10.2003,	मंगलवार	–	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज– श्राद्ध तिथि
(9)	दि. 7.10.2003,	सोमवार	–	नवरात्रे प्रारंभ
(10)	दि. 15.10.2003,	मंगलवार	–	दशहरा, प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(11)	दि. 16.10.2003,	बुधवार	–	एकादशी, व्रत
(12)	दि. 21.10.2003,	सोमवार	–	शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
(13)	दि. 23.10.2003,	बुधवार	–	ब्र. स्व. प.पू. जागास्वामी की जन्मजयंती
(14)	दि. 1.11.2003,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(15)	दि. 2.11.2003,	शनिवार	–	धनतेरस - लक्ष्मी पूजन
(16)	दि. 4.11.2003,	सोमवार	–	दीवाली, शारदा पूजन
(17)	दि. 5.11.2003,	मंगलवार	–	अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ
(18)	दि. 6.11.2003,	बुधवार	–	भैयादूज
(19)	दि. 9.11.2003,	शनिवार	–	लाभपंचमी
(20)	दि. 15.11.2003,	शुक्रवार	–	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327

Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5950443

Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi

TO,